विघ्नविनाशक और विघ्न ....

मंदिरों में जिनकी मूर्तियों के दर्शन से ही भक्तों के विघ्न टल जाते हैं, वे स्वयं भला विघ्नों के वश कैसे हो सकते हैं? जिनके ऊपर स्वयं भगवान छत्रछाया बनकर रहता हो, उन्हें भला विघ्न कैसे हिला सकते हैं? जिनकी जीवन-नैया का खिवैया स्वयं सर्वशक्तिवान हो, तूफानों के झोंके उनकी नाव को भला कैसे डुबो सकते हैं? और जो स्वयं ही सर्व के विघ्नविनाशक हों, उन्हें भला विघ्नों से डर कैसा? विघ्नों से युद्ध करना तो उन्हें एक अनुपम आनन्द का आभास कराता है। विघ्नों को पार करके संसार के लिए एक नवीन पथ निर्माण कर देना - इसे ही वे महानता समझते हैं। तो आओ, हम सभी मिलकर विघ्नों को चुनौती दें।

विघ्नों के कंटीले पथ पर चलना कोई भी नहीं चाहेगा। परन्तु यदि रास्ता ही वही हो तो साहस व धैर्यता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। हम विघ्नों का पूर्ण विश्लेषण करें और विघ्नों पर हमारी विजय सदा के लिए निश्चित है - ऐसा दृढ़ निश्चय कर सदा के लिए निश्चिंत हो जाएं।

नि:संदेह यदि कोई मनुष्य चारों ओर से विघ्नों से घिर गया हो तो मनोस्थिति को अचल रखना सहज काम तो नहीं है। विघ्नों के प्रकोप तो शक्तिशाली, बुद्धिवान व्यक्ति को भी हिलाकर रख देते हैं। ऐसे में चाहिए कोई शक्तिशाली साथी जो सच्चा साथी बनकर मनुष्य के साहस, हिम्मत व निश्चय को स्थिर रखने में सहयोग दे सके। कोई ऐसा योग्य मित्र हो तो भी अच्छा, नहीं तो त्रिकालदर्शी भगवान को ही अपना सदाकाल का साथी बना लेना चाहिए। कई बार बुद्धि के डिस्टर्ब होने से सूक्ष्मातिसूक्ष्म सर्वशक्तिवान परमात्मा से बात करने में सफलता नहीं भी होती, इसलिए ही कहा गया है कि कोई योग्य साथी भी हो तो भी अच्छा। परन्तु यदि कोई भगवान को अपना साथी बना ले तो विघ्न रूई की तरह उड़ जायेंगे। तो स्वयं को विघ्नों के समक्ष हिमालय की तरह अचल खड़ा रखने के लिए इस प्रकार की स्मृति बनाये:-

तुम्हारी चिंता स्वयं भगवान कर रहा है - जब से हमने भगवान का हाथ पकड़ा, उसने हमारे अनेक बोझ हर लिए हैं। यदि हम यह कहें कि अपने आज्ञाकारी, वफादार वत्सों के 90 प्रतिशत विघ्न तो उसने हर ही लिए हैं तो अतिश्योक्ति न होगी। भला हम विचार करें - कोई समर्थ बाप अपने प्यारे बच्चों को विघ्नों में उलझा कैसे देख सकता है? फिर वह तो सर्व-समर्थ है और हम उसके वे महान वत्स हैं जिन्होंने उसके सभी कार्य सम्पन्न करके ही दिल में ठान ली है, जो उसके ईशारों पर कुर्बान हैं। थोड़े से विघ्न जो उसने हमारे लिए छोड़ दिये हैं, हमें शक्तिशाली व अनुभवी बनाने के लिए अन्यथा भला सर्वशक्तिवान के लिए क्या कठिन है? चुटकी बजाते ही वह हमें सम्पन्न बना सकता है।

तो हम याद रखें - भगवान स्वयं हमारी चिंता कर रहा है! हमें अपनी चिंता क्यों? वह बार-बार कह रहा है - बच्चे, अपना सारा बोझ मुझे दे दो, तुम क्यों बोझ उठाये फिरते हो? चिंताएं छोड़ बेगमपुर के बादशाह बन जाओ। फिर भी यदि बोझ उठाने में कोई अपना गौरव अनुभव करे तो उसकी बुद्धि के तो कहने ही क्या...!

सत्यता का बल तुम्हारे पास है - जीवन में अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं। संसार की ओर से आने वाले विघ्न हों या हम पर बिना अर्थ ही दोष लगाए जाएं.. पर हम यह न भूलें कि कलियुग के अंत में भी सत्यता की शक्ति का बल कम कार्य नहीं करता। 'असत्यता' कमजोर है, 'सत्यता' शक्तिशाली है। इसलिए अपने सत्यता के बल पर हम धैर्यचित व अचल बने रहना सीखें। स्वयं में ही हमारा विश्वास कम न हो। जहां सत्यता की शक्ति है, वहां संसार की कोई भी शक्ति - चाहे धन की शक्ति, चाहे सरकार की शक्ति हो या कोर्ट की शक्ति - हमारा कुछ भी नहीं कर सकेगी। एक दिन समस्त संसार को हमारी सत्यता के समक्ष झुकना पड़ेगा।

पवित्रता का बल तुम्हारे पास है - सूक्ष्म अपवित्रता विघ्नों का आह्वान करती है। यदि हमारा जीवन विघ्नों से घिर रहा हो तो हमें अपनी पवित्रता को चेक करना चाहिए। जहां पवित्रता की शक्ति है, वहां इस विशुद्ध अग्नि में विघ्न कहीं भी खड़े नहीं रह सकते। उन्हें हम तक आने का साहस भी नहीं होगा। चाहे शारीरिक व्याधि के रूप में विघ्न आया हो या भूत-प्रेत के रूप में, चाहे समाज की ओर से विघ्न हो या अपने ही परिवार की ओर से, यदि हम अपनी पवित्रता की शक्ति में स्थिर हैं तो विघ्न सहज ही समाप्त हो जायेंगे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पवित्रता का बल संसार का सबसे बड़ा बल है। इस बल पर हमारे पूरे 84 जनमों की नींव स्थिर है। हमें विघ्न-मुक्त रहने के लिए व अनेक आत्माओं को विघ्न-मुक्त बनाने के लिए इस बल को निरंतर बढ़ाना चाहिए। पवित्रता के बल से युक्त आत्मा की दृष्टि ही दूसरों को भी विघ्न-मुक्त कर देती है तो स्वयं के विघ्नों की तो बात ही कहां...।

भगवान ने स्वयं हमारा हाथ पकड़ा है, तो हमारा कहीं भी अकल्याण नहीं होगा बल्कि विघ्न हमारा मार्ग स्पष्ट करेंगे, विघ्न हमें प्रत्यक्ष करेंगे, विघ्न हमें और ही ईश्वर के समीप लायेंगे - यह विश्वास हमें विघ्नों के समय अडोल रखता है।

भगवान पर सम्पूर्ण विश्वास हो - जबकि भगवान ने स्वयं हमारा हाथ पकड़ा है, तो हमारा कहीं भी अकल्याण नहीं होगा बल्कि विघ्न हमारा मार्ग स्पष्ट करेंगे, विघ्न हमें प्रत्यक्ष करेंगे, विघ्न हमें और ही ईश्वर के समीप लायेंगे - यह विश्वास हमें विघ्नों के समय अडोल रखता है। विघ्नों के समय हमारा निश्चय न डोले कि यह क्या? भगवान का बनने पर भी वह हमें मदद क्यों नहीं करता? हमने तो सुना था कि वह अपने वत्सों पर विघ्न नहीं आने देता, परन्तु हम तो जब से बाबा के बने, विघ्नों ने हमारा पीछा ही कर लिया! नहीं, सत्यता तो यह है कि यदि ईश्वरीय सहयोग हमारे साथ न होता तो हम जीवित भी न होते। हमें यह ईश्वरीय महावाक्य नहीं भूलने चाहिए - भगवान विघ्नों के समय भी बच्चों को समाधान टच कराता है। परन्तु बुद्धि की लाइन स्पष्ट न होने के कारण, बच्चे भगवान के इशारे को कैच नहीं कर पाते। इसलिए फिर अगले दिन भी अमृतवेले बाप, बच्चों को समस्या का समाधान टच कराता है, परन्तु यदि बच्चे अमृतवेले योगयुक्त ही न हों, तो बाबा क्या करें?

विघ्न-विजयी बनने के लिए पुण्यों का बल जमा करें - विघ्नों का घरा बन जाने पर इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए अन्य बातों के साथ-साथ हमारे पुण्यों का बल भी बहुत काम आता है। जिन्होंने जीवन में किसी को दु:ख न दिया हो, ईश्वरीय परिवार में स्नेह का आदान-प्रदान किया हो, ईश्वरीय कार्य में सहयोग देकर पुण्य का बल बढ़ाया हो, तो उनके साथ रहने वाली अनेक महान आत्माओं का आशीर्वाद, उन्हें विघ्न-मुक्त होने में बड़ा योगदान देता है।

यदि हम स्वयं विघ्न-मुक्त रहना चाहते हैं तो दूसरों के मार्ग में अपनी कटु वाणी, असहयोगी वृति, दुर्व्यवहार व अन्य गलत तरीकों से विघ्नों की दीवारें खड़ी न करें। अन्यथा पवित्रात्माओं के मन से निकली आहें श्राप बनकर हमें विघ्नों में दबे रहने पर मजबूर कर देंगी। इसलिए पुण्य जमा करें। दूसरों के दिल को सुख देना ही पुण्य है।

विघ्न-मुक्त होने के लिए ज्ञान-युक्त रहें - त्रिकालदर्शी आत्माएं ये जानती हैं कि विघ्न और कुछ भी नहीं, बल्कि एक कमजोर मन की रचना है और मन कमजोर तब होता है, जब उसमें ज्ञान का बल नहीं होता। अत: ज्ञान-युक्त अर्थात् स्मृतिस्वरूप होने का अभ्यास हमारे मन को शक्तिशाली रखेगा और कई विघ्न तो हम उत्पन्न ही नहीं करेंगे। तो क्या हम ही विघ्नों का आह्वान करते हैं? हाँ, यह सत्य है। कई विघ्न हम अपनी अशुभ वृत्ति द्वारा उत्पन्न करते हैं, कई विघ्न हम अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण, अपने कटु वचनों के कारण, निकृष्ट व्यवहार के द्वारा व कई विघ्न हम ईश्वरीय अवज्ञाओं के कारण पैदा करते हैं।

ज्ञान द्वारा हम यह भी जानते हैं कि कई विघ्नों के बीज हमने स्वयं ही भिन्न-भिन्न जन्मों में बोए हैं। जैसे - यदि कोई बार-बार हमें परेशान कर रहा है तो अवश्य ही किसी जन्म में हमने उसे परेशान किया होगा। यदि कोई बिना कारण ही हमारे आगे विघ्न डाल रहा है, तो अवश्य ही कभी हम उसके लिए विघ्न बन कर रहें होंगे। यदि तन की व्याधि के रूप में हमारे सामने विघ्न आ रहे हों तो हमने तन से अनेक विकर्म किये होंगे। यदि हमारे आँखें रोगग्रस्त है तो हमारी दृष्टि काफी बुरी रही होगी।

एक ज्ञानी स्वयं को ही विघ्न का कारण जान सदा धैर्यचित्त रहकर विघ्नों को सहज ही पार कर लेता है। वह इस चिंता में नहीं जलता कि विघ्न क्यों आ रहे हैं? वह सभी विघ्नों का स्वागत करता है व अनुभव करता है कि विघ्न उसे आगे बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

शेष भाग पृष्ठ 11 पर

गोधरा। 'अमृत-महोत्सव' पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए जयद्रथ सिंह परमार, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीसेवानंद गिरजा महाराज, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.उषा।

जलगांव। प्रसिद्ध समाज सेवक अन्ना हजारे एवं पंतजली योग के जिला अध्यक्ष हेमंत चौधरी को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.वर्षा, ब्र.कु.तेजल तथा अन्य।

कांकेर। जेल के कैदी भाइयों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में हैं जेल अधिक्षक ज.एल.नेतान, ब्र.कु.रामा एवं अन्य।

कोपरगांव। 'ट्रेन रथ यात्रा' का उद्घाटन करने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं काशीकानंद महाराज, पी.आय.पवार, ब्र.कु.सरला तथा अन्य।

परबत शहर (नागौर)। 'अमृत महोत्सव' के अवसर पर 'शिव रथ' का हाथ में कलश लेकर स्वागत करते हुए मातायें।

सिद्धपुर। गांव में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.विजय तथा मंचासीन हैं सरपंच बाबु भाई, ब्र.कु.दक्षा तथा अन्य।